© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 10 , Issue : 01 | January - March 2024
DOI : https://doi.org/10.36676/dira.v10.i1.03

स्वामी दयानन्द सरस्वती : डी०ए०वी० का इतिहास और समाज के निर्माण में इसकी भूमिका

दिव्य प्रकाश
शोधार्थी, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक
डॉ० कुमारी सुमन
सहायक प्रोफेसर, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक

सारांश

किसी भी सामाजिक गतिविधि के पीछे की भावना उसकी सीमा और गुणवत्ता के साथ–साथ उसकी निरंतरता को भी निर्धारित करती है। डी०ए०वी० के सामाजिक कार्यक्रम निवारक और सुधारात्मक दोनों रहे हैं। आर्य समाज के छठवें एवं नवे सिद्धांत के अनुसार, मनुष्य को सभी की भलाई के लिए कार्य करना सभी के शारीरिक, आध्यात्मिक और सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देना चाहिए तथा स्वयं केंद्रित होने से बचना चाहिए। यज्ञ केवल अग्नि कर्मकांड नहीं है, बल्कि एक परोपकारी कार्य है जिसमें प्रत्येक जीवित प्राणी शामिल हैं।

भूमिका

स्वामी दयानंद सरस्वती (1824–1883), एक महान शिक्षाविद्, समाज सुधारक और सांस्कृतिक राष्ट्रवादी थे। दयानंद सरस्वती जी का सबसे बड़ा योगदान शिक्षा और धर्म के क्षेत्र में क्रान्ति लाने वाले आर्य समाज की नींव रखना था । स्वामी विवेकानंद द्वारा 'रामकृष्ण मिशन' की स्थापना के लगभग बाईस साल पहले और राजा राममोहन राय द्वारा 'ब्रह्म सभा', जो बाद में 'ब्रह्म समाज' के रूप में विकसित हुई, की स्थापना के सैंतालीस साल बाद दयानंद सरस्वती जी ने 1875 में बंबई (वर्तमान मुंबई) में पहले आर्य समाज की स्थापना की थी। शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का उत्प्रेरक मानते हुए उन्होंने 'लड़कों और लड़कियों' दोनों को समान रूप से कला, विज्ञान तथा तकनीकी कौशल की शिक्षा को महत्व दिया, ताकि उनके मानसिक क्षितिज को व्यापक बनाया जा सके। उनकी जन्मजात क्षमताओं को उजागर किया जा सके और उनके सद्गुणों का विकास किया जा सके। आर्य समाज ने मूर्तिपूजा, अंधविश्वास, जाति प्रथा और अस्पृश्यता से लेकर बहुविवाह, बाल विवाह, विधवाओं के साथ दुर्व्यवहार, पर्दा प्रथा और लिंग असमानता जैसी धार्मिक और सामाजिक बुराइयों को खारिज करते हुए वैदिक मूल्यों का पुनरुत्थान किया।

30 अक्टूबर, 1883 को स्वामी दयानंद के निधन के बाद, उनकी विरासत को निरंतर बनाए रखने के लिए आर्य समाज के आठवें सिद्धांत के अनुसार मन और आत्मा की निरक्षरता को दूर करने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में उद्यम करना अनिवार्य था, जैसा कि आर्य समाज का मानना है – हमें अज्ञानता को दूर करने और ज्ञान को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखना चाहिए। उनकी मृत्यु के तीन साल बाद 'दयानंद एंग्लो वैदिक कॉलेज ट्रस्ट एंड मैनेजमेंट सोसाइटी' (Dayanand Anglo Vedic College Trust and Management Society), जिसे लोकप्रिय रूप से 'डी०ए०वी०' के नाम से जाना जाता है, की स्थापना ने

© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 10 , Issue : 01 | January - March 2024
DOI : https://doi.org/10.36676/dira.v10.i1.03

डी०ए०वी० आंदोलन की शुरुआत की, जिसका उद्देश्य उनके सामाजिक और शैक्षिक विचारों को स्पष्ट करना था। डी०ए०वी० आंदोलन रूढ़िवादी और विधर्मी, पुनरुत्थानवाद और सुधार, विश्वास और उनकी ताकतों के बीच द्वंद्वात्मक अंतःक्रिया से विकसित हुआ। यह आंदोलन पश्चिमी चुनौती, नए सामाजिक–आर्थिक परिवेश के उद्भव और उद्देश्य और दिशा की एक नई भावना के साथ आगे बढ़ा और विज्ञान और तर्कसंगतता की प्रचलित भावना के साथ वैदिक परंपरा और मानवतावाद के सर्वोत्कृष्ट पहलुओं को अभिसिंचित किया। इस आंदोलन का उद्देश्य स्वामी जी के सामाजिक और शैक्षिक विचारों को मूर्त रूप प्रदान करना था। डी०ए०वी० आंदोलन को राय बहादुर लाला लाल चंद (1852–1912), महात्मा हंस राज (1864–1938), पं गुरु दत्त विद्यार्थी (1864–1890), लाला लाजपत राय (1865–1928), भाई परमानंद (1874–1947), प्राचार्य सैन दास (1840–1890), बख्शी राम रतन, बख्शी टेक चांद आदि जैसी शक्तिशाली हस्तियों द्वारा पोषित किया गया था। भारत के विभाजन के बाद डी०ए०वी० आंदोलन को एक अस्थायी झटका लगा क्योंकि इसके द्वारा स्थापित अधिकांश संस्थान पाकिस्तान में स्थित थे। लेकिन प्रधानाचार्य मेहर चंद, लाला बलराज, डॉ न्यायमूर्ति मेहर चंद महाजन आदि जैसे दिग्गजों के गतिशील काम के साथ फिर से नई शक्ति के साथ आगे बढ़ा।

पहला 'डी०ए०वी० हाई स्कूल' (DAV High School) 1 जून, 1886 को लाहौर में स्थापित किया गया जिसके प्रधानाध्यापक लाला हंस राज (1864–1938) थे। डी०ए०वी० आंदोलन के जनक कहे जाने वाले हंस राज को उनकी ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और निस्वार्थता के साथ–साथ उनकी भविष्यवादी दृष्टि और ज्ञान के कारण 'महात्मा' के रूप में जाना जाने लगा। उन्होंने बिना कोई वेतन लिए मिशनरी उत्साह के साथ सेवा की। डी०ए०वी० प्रबंधन द्वारा 28 अप्रैल, 1888 को रखे गए एक प्रस्ताव के अनुसार, यह विद्यालय महाविद्यालय में विकसित हुआ और हंस राज इसके पहले प्रधानाचार्य बने।

पहले सत्र में केवल 505 छात्रों के एक समूह के साथ एक छोटे शैक्षिक उद्यम के रूप में जो विद्यालय शुरू हुआ था, वह अब विशाल आयाम ग्रहण कर चुका है। अपने 125 वर्षों के इतिहास में डी०ए०वी० का केरल को छोड़कर देश के लगभग सभी हिस्सों – ग्रामीण, शहरी अर्ध–शहरी, बस्तियों और आदिवासी क्षेत्रों में प्रसार हुआ। इसके 715 संस्थानों के नेटवर्क में शिक्षा के हर क्षेत्र से जुड़े हुए विद्यालय एवं महाविद्यालय शामिल हैं, जिनमें आयुर्वेद से संबंधित स्कूल (सरकारी सहायता प्राप्त, सार्वजनिक, अंतर्राष्ट्रीय और गैर–औपचारिक), कला, विज्ञान, कानून, शिक्षा, कृषि संस्थान, इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी संस्थान, वाणिज्य और प्रबंधन संस्थान, चिकित्सा और पैरामेडिकल संस्थान, दंत चिकित्सा, नर्सिंग और स्वास्थ्य देखभाल संस्थान, एक वैदिक शोध संस्थान (होशियारपुर) और हाल ही में जालंधर (पंजाब) में स्थापित विश्वविद्यालय शामिल हैं। डी०ए०वी० अपनी गतिविधियों के विस्तार के लिए सरकारी और निजी क्षेत्र से भी जुड़ा हुआ है।

अपने सामाजिक अर्थ में, यह बिना किसी स्वार्थ के की जाने वाली सभी मानवीय गतिविधियों को समेटे हुए है। लोगों के मानसिक वातावरण को बदलकर और उनमें जागरूकता पैदा करके सामाजिक समस्याओं को सामाजिक रूप से नियंत्रित किया जा सकता है। इसी सोच के साथ डी०ए०वी० संस्थान युवाओं को शिक्षित करके और उन्हें उद्देश्यपूर्ण गतिविधियों में शामिल करके जिम्मेदारी और परिवर्तन की भावना पैदा करने का प्रयास करते हैं। युवाओं को वैदिक मूल्यों को अपनाने के लिए और लिंग पूर्वाग्रह, बाल

ISSN : 2454 – 308X | Volume : 10 , Issue : 01 | January - March 2024
DOI : https://doi.org/10.36676/dira.v10.i1.03

शोषण, दहेज, शराब, नशीली दवाओं की लत, जुआ, पर्यावरण प्रदूषण, भ्रष्टाचार, काला धन, सांप्रदायिकता, जनसंख्या जैसी बुराइयों के खिलाफ प्रेरित किया जाता है।

उपरोक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह संस्थान संगोष्ठी, कार्यशाला, भाषण प्रतियोगिता, अतिथि व्याख्यान, धर्म शिक्षा, सामाजिक जागरूकता शिविर, चरित्र निर्माण शिविर, वैदिक चेतना शिविर, सार्वजनिक रैलियाँ या जुलूस और अभियान चलाते हैं। छात्रों को कभी–कभी दहेज, शराब पीने या धूम्रपान के खतरे के खिलाफ शपथ लेने के लिए कहा जाता है।

आंकड़े बताते हैं कि दिल्ली के झुग्गी–झोंपड़ियों के 9,664 छात्रों को दिल्ली के डी०ए०वी० विद्यालयों में सायंकालीन कक्षा चलाकर मुफ्त शिक्षा दी जा रही है। इसके अलावा 'डी०ए०वी० पब्लिक विद्यालय', गुड़गांव द्वारा झुग्गी–झोंपड़ियों के 300 छात्रों सहित आर्थिक रूप से पिछड़े समूहों के 550 छात्रों को मुफ्त वर्दी और अध्ययन सामग्री प्रदान की जाती है। साथ ही जम्मू में 70 बच्चों को 'महाराजा हरि सिंह डी०ए०वी० पब्लिक विद्यालय' द्वारा परोपकारी उद्देश्यों के लिए गोद लिया गया है।

1877 में स्वामी दयानंद द्वारा स्थापित और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली द्वारा संचालित 'आर्य अनाथालय', फिरोजपुर (पंजाब), जो कि डी०ए०वी० समाज का एक धार्मिक अंग है, 200 निराश्रित लड़कों और लड़कियों को मुफ्त आवासीय और अन्य सुविधाएँ प्रदान करता है और उन्हें व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षित करता है,ताकि वे अपने पैरों पर खड़े हो सकें। इसके अतिरिक्त, जम्मू–कश्मीर में अनाथालय चलाने के लिए डी०ए०वी० प्रतिष्ठान सालाना करीब 21.93 लाख रुपये खर्च कर रहा है। डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल के कांके परिसर में 2 एकड़ भूमि पर बिहार और झारखंड के अनाथों और निराश्रितों के लिए एक बाल गृह भी स्थापित किया जा रहा है।

कुछ हिंदी भाषी क्षेत्रों में निरक्षरता और जनसंख्या वृद्धि की भयावहता का संज्ञान लेते हुए, डी०ए०वी० संस्थानों ने शिक्षकों एवं छात्रों की सहायता से गैर–औपचारिक शैक्षिक केंद्र भी शुरू किए हैं। वर्तमान में बिहार और झारखंड में शिक्षा के 31 गैर–औपचारिक केंद्र कार्यरत हैं। उनमें से दो गिरिडीह की जेल में करीब 775 बंदियों के लिए चलाए जा रहे हैं। धनबाद और उसके उपमंडलों के आसपास से, तेजी से लुप्त हो रही जगिस, उठालू और बिरहोर जनजाति की साक्षरता पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। दयानंद फाउंडेशन के तत्त्वाधान में पिछले लगभग तीन दशकों से खूंटी और उसके उपनगरों में निःशुल्क नेत्र शल्य चिकित्सा शिविर आयोजित किए जाते रहे हैं। डी०ए०वी० की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2010–11 के दौरान 976 मोतियाबिंद रोगियों का उपचार किया गया।

उत्तर–पूर्वी क्षेत्र में, डी०ए०वी० ने भारत सरकार के समाज कल्याण विभाग के सहयोग से आश्रम स्कूलों और व्यावसायिक केंद्रों का एक समूह स्थापित किया है। पंजाब और हरियाणा के डी०ए०वी० कॉलेजों में रोजगार उन्मुख व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में आदिवासी छात्रों को मुफ्त प्रशिक्षण दिया जाता है। 'दयानंद लॉ कॉलेज', सोलापुर में, 1989 से निःशुल्क कानूनी सहायता केंद्र और कानूनी साक्षरता शिविर आयोजित किए जा रहे हैं।

ISSN : 2454 – 308X | Volume : 10 , Issue : 01 | January - March 2024
DOI : https://doi.org/10.36676/dira.v10.i1.03

समाज के निचले तबके की महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए डी०ए०वी० समाज द्वारा दिल्ली, फरीदाबाद और यमुनानगर (हरियाणा), रांची (झारखंड), इंफाल (मणिपुर) और अन्य स्थानों के झुग्गी झोपड़ी के क्षेत्रों में शिल्प और व्यावसायिक केंद्र चलाए जा रहे है। महिलाओं को कपड़ा काटने, सिलाई करने, कढ़ाई करने, गुड़िया बनाने आदि का निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जाता है और कभी–कभी अपना प्रशिक्षण पूरा करने के बाद सिलाई मशीन या अन्य सामग्री की पेशकश की जाती है। यमुनानगर जैसे कुछ केंद्रों में कंप्यूटर, खाद्य संरक्षण आदि का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। आर्य समाज द्वारा अक्सर सामूहिक विवाह कार्यक्रम चलाए जाते हैं, जिसमें एक जोड़े को 20,000 रुपये के कपड़े और अन्य उपयोगी सामान दिए जाता है। डी०ए०वी० के रिकॉर्ड के अनुसार, अब तक 1000 लड़कियों को गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने में मदद की गई है। डी०ए०वी० का एक त्रिपक्षीय चरित्र है – यह एक शैक्षिक संगठन ,राष्ट्र निर्माण संगठन और एक प्रगतिशील आंदोलन के रूप में सामाजिक स्वास्थ्य को निरंतर सुधार रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ० सुरेन्द्र कुमार, महर्षि दयानन्द वर्णित शिक्षा पद्धति, वैदिक अनुसंधान शिक्षा पद्धति सदन, नई दिल्ली, 2004
2. राम बाबू गुप्त, महान पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षा शास्त्री, सामाजिक विज्ञान प्रकाशन, कानपुर, 1980
3. सीताराम चतुर्वेदी, शिक्षा प्रणालियाँ एवं प्रवर्तक, नन्द किशोर एण्ड ब्रदर्श प्रकाशन, वाराणसी, 1963
4. डॉ० रामनाथ शर्मा, समकालीन भारतीय शिक्षा दार्शनिक, विनीत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1989
5. डॉ० सरोज सक्सेना, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय आधार, साहित्य प्रकाशन, आगरा, 1994
6. श्रीकान्त आचार्य, युग निर्माता स्वामी दयानन्द, नागप्रकाश प्रकाशन, दिल्ली, 1991
7. इन्द्र विद्यावाचस्पति, महर्षि दयानन्द, सुबोध पॉकेट बुक्स प्रकाशन, दिल्ली, 1975
8. डॉ० भवानीलाल भारतीय, नवजागरण के पुरोधा, दयानन्द सरस्वती वैदिक पुस्तकालय प्रकाशन, अजमेर, 1983